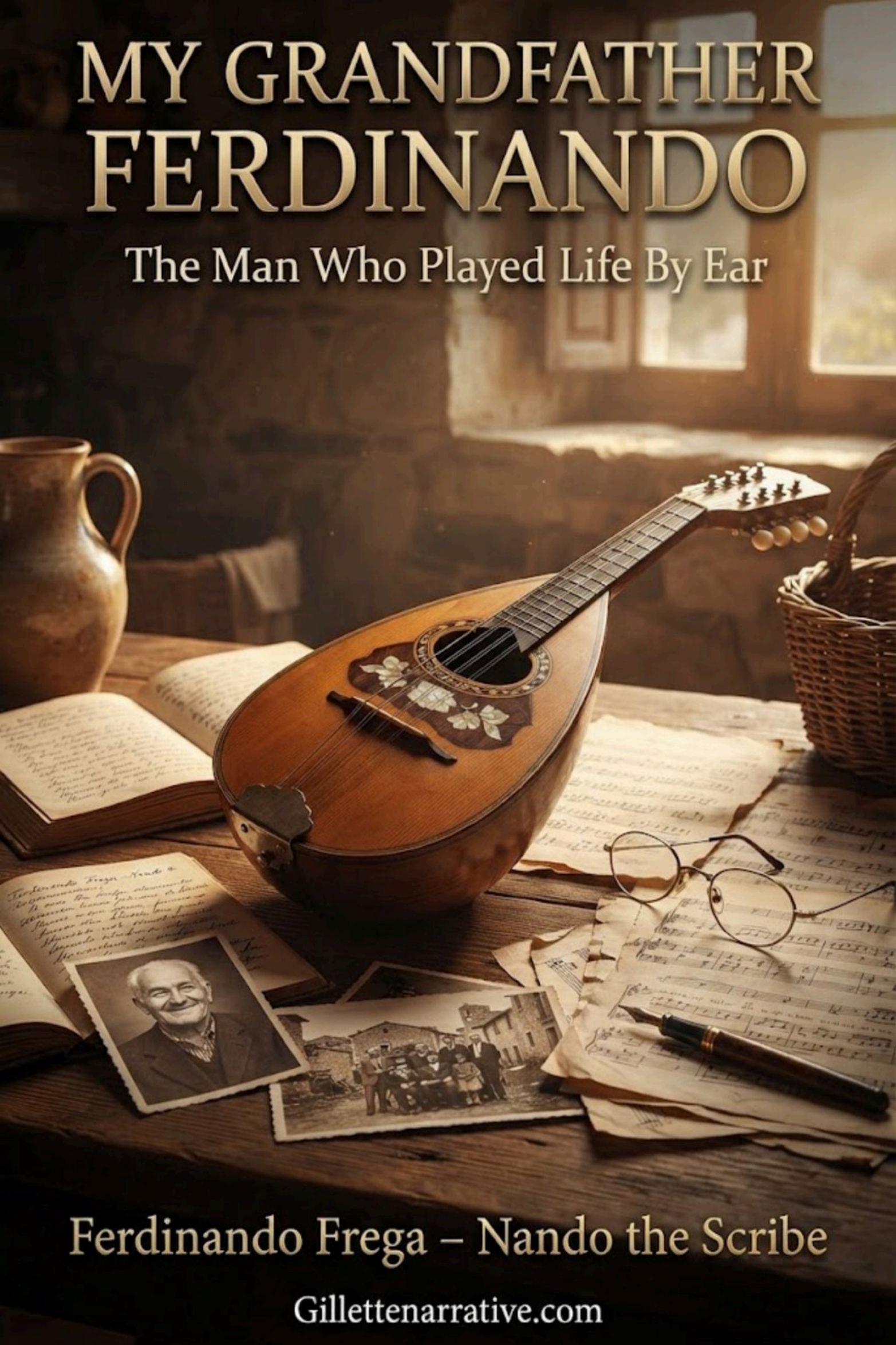
MY GRANDFATHER FERDINANDO

The Man Who Played Life By Ear



Ferdinando Frega – Nando the Scribe

Gillettenarrative.com

जिलेट: मेरे दादा फर्दिनांदो

मैं सुबह से अपनी मेज़ पर बैठा था — वह करने का एक तरीक़ा जो मैं चाहता था, न कि वह जो मुझे करना पड़ता। एक ऐसी दुनिया के भीतर ख़ुश रहने का एक तरीक़ा, जिसमें टिके रहने की मियाद अभी तय नहीं हुई थी।

किताब पढ़ने, वेब पर कोई लेख पढ़ने, किसी दोस्त के फ़ोन, डाकिये की घंटी, और पत्नी के उस बुलावे के बीच कि गाड़ी तक चलूँ और राशन के थैले भीतर ले आऊँ — बहुत-से कॉल सेंटर हैं जिन्हें मुझे फ़ोन करने में दिलचस्पी है। और मैं उन्हें चौंका देता हूँ, क्योंकि मैं उनकी माँग को प्रेरणा की तरफ़ मोड़ देता हूँ। जब मैं उन्हें बताता हूँ कि मैं ग़रीब हूँ, तो उन्हें मुझ पर तरस आता है। औरतें मेरे लिए कुछ करना चाहती हैं — पर वे नहीं जानतीं कि मुझे बिना बेचे लेना सिखाया गया था। एक विश्वविद्यालय स्तर का सबक़, एक ऐसे आदमी से जिसके पास बस एक डिप्लोमा है।

और इस सबके बीच संगीत है — न्यूयॉर्क का संगीत, मैनहैटन का, अंग्रेज़ीभाषी — फिर मेरे अपने बरसों के संगीत की तरफ़ बढ़ना, और शास्त्रीय संगीत पर ख़त्म करना: मोत्सार्ट, शोपाँ, विवाल्दी और बीथोवन। फिर उस्ताद एन्नियो मोर्रिकोने की रचनाओं के साथ सुकून पाना।

इन्हीं में से एक रचना के भीतर आज मेरी मुलाक़ात मैंडोलिन से हुई — मेरे दादा का पसंदीदा साज़। छह साल की उम्र में उन्हें एक मैंडोलिन मिला और नब्बे से ज़्यादा बरस तक उन्होंने उसे सुन-सुनकर बजाना सीखा, संगीत पढ़े बिना और अमेज़न पर कोर्स ख़रीदे बिना। उनका इकलौता जुनून वे सेरेनेड थे जो वे औरतों के लिए गाते-बजाते थे — जिनमें फ़रमाइश पर बनाए गए भी शामिल थे।

एक ज़िंदगी, फ्रेगा परिवार की, जिसमें कच्चा माल कभी पैसा नहीं रहा — बस वह करने का सुख जिसके लिए हम पैदा हुए थे: भुलाए न जाना।

नांदो